Send 19/04/2021

Page No.
Date

(1)

B.A (Hons) Part I
Philosophy - Paper II
Topic - Theory of Criticism

Dr. Sachidanand Prasad.
Dept. of Philosophy.
R.R.S. College, Mokama.

समीक्षावाद वह दार्शनिक सिद्धान्त है जिसके अनुसार ज्ञान की प्राप्ति न तो केवल बुद्धि से होती है और न केवल अनुभव से। इसलिए समीक्षावाद के अनुसार बुद्धिवाद और अनुभववाद एकांगी सिद्धान्त है। समीक्षावाद का कहना है कि ज्ञान की प्राप्ति में बुद्धि तथा अनुभव दोनों का महत्वपूर्ण स्थान है। इस सिद्धान्त के अनुसार ज्ञान का आरंभ अनुभव से होता है परन्तु वहीं से बुद्धि की सहायता प्राप्त हो जाती है। इस सिद्धान्त के प्रमुख समर्थक Kant है। Kant ने बतलाया है कि बुद्धि ने गणित को ज्ञान का आदर्श मानकर सार्वभौमिकता तथा अनिवार्यता को यथार्थ ज्ञान का आदर्श बनाया तथा अनुभववाद ने भौतिक विज्ञानों के ज्ञान को ज्ञान का आदर्श मानकर नवीनता को ज्ञान का आदर्श बनाया परन्तु वास्तव में यथार्थ ज्ञान में तीन गुण होना चाहिए। सार्वभौमिकता, अनिवार्यता और नवीनता।

Kant ज्ञान को संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णयों के एक तंत्र के रूप में परिभाषित करते हैं। ऐसा ज्ञान गणित और भौतिक विज्ञान दोनों में है। इसप्रकार इस सिद्धान्त की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं

(i) ज्ञान का साधन बुद्धि और अनुभव दोनों है।

(ii) ज्ञान में सार्वभौमिकता, अनिवार्यता के साथ ही साथ नवीनता भी होनी चाहिए।

(iii) ज्ञान की पद्धति निगमनात्मक एवं आगमनात्मक दोनों है।

(iv) ज्ञान में मन इस अर्थ में निष्क्रिय भी रहता है कि वह ज्ञान से सम्बन्धित सारी बातें अपने अन्दर से ही उत्पन्न नहीं करता है और फिर प्रत्यक्षीकरण तथा बोध के आकारों को अपनी तरफ से लागू करते हुए वह सक्रिय भी रहता है।

आलोचना:- (i) Kant अपने पूर्ववर्ती विद्वानों को इस आधार पर रूढ़िवादी कहते हैं कि उन्होंने ज्ञान संबंधी कई मूलभूत बातों को बिना किसी छानबीन के एक रूढ़िवादी ढंग से स्वीकार कर लिया है परन्तु वास्तविकता तो यह है कि उन्होंने खुद भी अपने ज्ञान सिद्धान्त में कई महत्वपूर्ण बातों को बिना किसी छानबीन के एक हठवादी तथा रूढ़िवादी ढंग से मान लिया है

(ii) ज्ञान की परिभाषा में Kant कुछ ऐसी विरोधी अवधारणाओं का समन्वय करने की चेष्टा करते हैं जो आधुनिक तर्कशास्त्र को मान्य नहीं है।